भारतीय कृषि साख्यिकी संसद्

(हिन्दी परिशिठ)

खंड २६] जून १९७४ [अंक १

अनुक्रमणिका

मिट्टी के विश्लेषण के आंकड़ों की व्याख्या हेतु उपादान विश्लेषण का एक प्रयोग —*टी० पी० अब्रह्म तथा हूबख्त* iii

द्विस्तरीय उत्तरोत्तर प्रतिचयन पर एक नोट —*ए० के० श्रीवास्तव तथा शिवतार सिंह* iii

वृत्ताकार अभिकल्पना परिणामों का विस्तार —*जी० एम० साहा, ए० डे तथा ए० सी० कुलश्रेष्ठ* iv

समंमित युग्मों के लिये एक थरस्टोन मोस्टेलर मॉडल —*जी० सदासिवन तथा एस० एस० सुन्दरम* iv

भूमिधरों के खेतों में किये गये पुनरावृत्त खेत प्रयोगों का सांख्यिकीय विश्लेषण —*एस० के० रहेजा तथा बी० एन० त्यागी* v

मिट्टी के विश्लेषण के आंकड़ों की व्याख्या हेतु उपादान विश्लेषण का एक प्रयोग

द्वारा

टी० पी० अब्राह्म हूब्ब्त

भूमि संस्थान, ईरान

सारांश

ईरान में फार्स खंड के शिराज क्षेत्र में प्रेक्षित भूमिचरों में विद्यमान मूल तत्त्वों का पता लगाने के लिए के लिए उपादान विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। यह देखा गया कि (1) पोषण स्थिति बताने वाले (2) लवणताक्षारियता सम्मिश्र (3) वयन और प्रांगारिक कार्बन तथा (4) विनिमय आधार स्थिति के अनुसार चार तत्त्वों को आधार भूत संघटक लिया जा सकता है जिससे इन मूल तत्त्वों पर आधारित विशंकों को आन्तरिक भूमिचरों की तुलना करने के लिए प्रयोग किया जा सकें।

द्विस्तरीय उत्तरोत्तर प्रतिचयन पर एक नोट

द्वारा

ए० के० श्रीवास्तव शिवतार सिंह

कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्थान, नई दिल्ली

सारांश

द्विस्तरीय उत्तरोत्तर प्रतिचयन जिसमें h अवसर हों तथा प्रथम स्तर की एवम् द्वितीय स्तर की प्रतिचयन इकाइयों का कुछ अंश अपरिवर्तित रखा गया हो, की स्थिति में एक आकलन विधि पर विचार किया गया है

वृत्ताकार अभिकल्पनापरिणामों का विस्तार

द्वारा

जी० एम० साहा, ए० डे, ए० सी० कुलश्रैष्ठ

कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्थान, नई-दिल्ली

सारांश

इस अभिलेख में दास की वृत्ताकार अभिकल्पना के द्वैधों का अध्ययन किया गया है। mk प्लाटों तथा k पुनरावृत्तियों वाले n ब्लाकों में m n उपचारों के लिए वृत्ताकार अभिकल्पनाओं को n k के विषम अथवा सम होने के अनुसार तथा $\frac{n+1}{2}$ अथवा $\frac{n+2}{2}$ समबद्ध श्रेणियों वाले आं० स० अ० ब्लॉ० (PBIB) सिद्ध किया गया है।

सममित युग्मों के लिखे एक थरस्टोन मोस्टेलर मॉडल

द्वारा

जी० सदा सिवन एस० एस० सुन्दरम्

कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान नई-दिल्ली

सारांश

इस अभिलेख में युग्मित तुलनाओं के एक भाग, जिन्हें सममित युग्मों का नाम दिया गया है, के गुणों पर अनुसंधान किया गया है। सममित युग्मों की R (nji) संकारक द्वारा तुलना पर विचार इन अभिकल्पनाओं की दक्षता पर विचार के साथ-साथ किया गया है। यदि प्रत्येक सममित युग्म को निश्चित संख्या में समीक्षकों के सम्मुख रखा जाए तथा समग्रन्थियों को छोड़े बिना उनकी पसन्द के विचार से व्यक्त किया जाय तो सिद्ध किया गया है कि उपचारों को इस अभिलेख में निकाले गये समग्रन्थि सहित थरस्टोन मौस्टेलर प्रकार के मॉडल की सहायता से क्रम बद्ध किया जा सकता है। इस मॉडल के लिए एक वैद्यता परिक्षण भी दिया गया है। परिणामों को भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान नई दिल्ली की अनाज की गुणता परीक्षा प्रयोगशाला में किये गये संवेदी संबंधी परीक्षण प्रयोग में प्राप्त आंकड़ों की सहायता से निदार्शित किया गया है।

भूमिधरों के खेतों में किये गये पुनरावृत खेत प्रयोगों का सांख्यिकीय विश्लेषण

द्वारा

एस० के० रहेजा बी० एन० त्यागी

कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली

सारांश

भूमिधरों के खेतों में वैज्ञानिक रीति से आयोजित साधारण उर्वरक प्रयोग आम तौर से कृषि उत्पादन को अधिकतम करने के लिए भूमिधरों की परिस्थितियों में उर्वरकों के अनुकूलतम प्रयोग की स्थान के अनुसार उर्वरक सम्बन्धी सिफारशें प्राप्त करने के लिए किये जाते हैं। इन प्रयोगों को 3-4 वर्षों तक की अवधि के लिए चलाया जाता है जिससे कि ऋतुओं में उतार चढ़ाव के प्रभाव भी सम्मलित किये जा सकें तथा विभिन्न वर्षों के परिणामों को मिलाकर स्थिर आकलक प्राप्त कर लिये जायें। जब यह प्रयोग कई वर्षों तक तथा कई स्थानों पर किये गये हों तो इस लेख में उपयुक्त साख्यिकीय विश्मेषण विधि का विकास कया गया हैं तथा इसका निदर्शन आई० सी० ए० आर की अखिल भारतीय समन्वित सस्थीय योजना के अन्तर्गत मुजफ्फर पुर (बिहार) जिले में 1958-59 से 1960-61 के दौरान किये गये साधारण उर्वरक प्रयोगों के आंकड़ों की सहायता से किया गया है।